TEACHER TRANING COLLEGE
C-II Guidance & Counselling

6. शिक्षा निर्देशन :- (Educational Guidance)
निष्पत्ति परीक्षणों का प्रयोग विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए वर्गीकरण किया जाता है जैसे - छात्रों के लिए विशेष शिक्षण की व्यवस्था की जाए, जिसे सुधारात्मक शिक्षण भी कहा जाता है। सुधारात्मक शिक्षण व्यक्तिगत अधिक होता है प्रत्येक छात्र के लिए अलग-2 सीखने की परिस्थितियों की व्यवस्था करनी होती है। छात्रों की निष्पत्ति से विद्यालय की प्रगति का भी बोध होता है कि विद्यालय का वातावरण, शिक्षा का वातावरण सीखने के लिए कितना उपयोगी है इसके अतिरिक्त बहुत अच्छे अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को विशेष अधिगम परिस्थितियों की व्यवस्था करनी चाहिए।

7.) शिक्षण अधिगम की प्रभावशीलता :- किसी पाठ्यक्रम के निष्पत्ति परीक्षण पर अधिकांश छात्र अच्छे अंक प्राप्त करते हैं, तो इससे यह भी विदित होता है कि शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया प्रभावशाली है अर्थात शिक्षक का शिक्षण उत्तम कोटि का है तो शिक्षण - अधिगम की प्रक्रिया प्रभावशाली नहीं है। अर्थात शिक्षक को पढ़ाना नहीं आता है। विद्यालयों में अध्यापकों की जो नियुक्तियाँ की जाती हैं, उन्हें एक साल के बाद, उनके पाठ्यक्रम के परीक्षणों पर प्राप्तांकों के आधार पर स्थाई किया जाता है।

e/Email/Notes

8) व्यावसायिक निर्देशन :- निष्पत्ति परीक्षणों के आधार पर छात्रों को व्यावसायिक निर्देशन भी दिया जाता है, विभिन्न पाठ्यक्रमों के प्राप्तांकों के आधार पर यह भी अनुमान लगाया जाता है।

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	
S	4	11	18	25	
S	5	12	19	26	

Scanned with CamScanner

कि छात्र किन क्षेत्रों में अधिक सफल हो सकता है। व्यवसाय के चुनने के लिए निर्देशन दिया जाता है क्योंकि पाठ्यक्रमों का सम्बन्ध विभिन्न व्यवसाय से होता है।

निष्पति परीक्षण के प्रकार

निष्पति परीक्षण तीन प्रकार के होते हैं:-

1) लिखित परीक्षण (Written test)
2) मौखिक परीक्षण (Oral test)
3) प्रयोगात्मक परीक्षण (Experimental test)

i) लिखित परीक्षण

निष्पति परीक्षणों में लिखित परीक्षणों का विशेष महत्व है, क्योंकि इनका प्रयोग सभी प्रकार के पाठ्यक्रमों के निष्पति परीक्षणों में किया जाता है। जिन पाठ्यक्रमों में प्रयोगात्मक परीक्षण प्रयोग किया जाता है उनमें लिखित परीक्षण भी लिया जाता है और दोनों के आधार पर छात्र की उपलब्धि या प्राप्तांक का बोध होता है। लिखित परीक्षण तीन प्रकार का होता है।

i) निबन्धात्मक परीक्षण
ii) वस्तुनिष्ठ परीक्षण
iii) सूक्ष्म उत्तर परीक्षण

Phone/Email/Notes

Notes

6	13	20	27
7	14	21	28
8	15	22	29
9	16	23	30
0	17	24	31
1	18	25	
2	19	26	

Scanned with CamScanner

यह तीनों प्रकार के परीक्षण शैक्षिक निष्पत्तियों के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं। परन्तु विश्वविद्यालय परीक्षण तथा बोर्ड की परीक्षाओं में आज भी निबन्धात्मक परीक्षाएं ही प्रयुक्त की जाती हैं। जबकि यह परम्परागत एवं दोषपूर्ण परीक्षण माने जाते हैं। इस प्रकार के परीक्षण दोषपूर्ण होने के साथ-2 ऐसे व्यवहार परिवर्तनों का मापन करते हैं, जिन्हें किसी अन्य परीक्षण द्वारा मापन नहीं किया जा सकता है। जैसे- अभ्यर्थी का लेख, पाठ्यवस्तु की व्यवस्था, विषय की गहनता एवं बोधगम्यता के साथ-साथ सौन्दर्यानुभूति एवं आलोचनात्मक क्षमताओं का मापन किया जाता है। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा के उच्च उद्देश्यों का मापन निबन्धात्मक परीक्षाओं द्वारा ही सम्भव है। अतः दोष इनका यह है कि निबन्धात्मक को प्रमाणिक परीक्षण नहीं बनाया जा सकता है अपितु उनमें सुधार किया जाता जा सकता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं की कई विशेषताएं हैं और इन्हें प्रामाणिक भी बनाया जा सकता है। परन्तु शिक्षा उच्च उद्देश्यों का मापन नहीं किया जा सकता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षा में प्रश्नों को अनुमान से सही करने का भी अवसर होता है। इसलिए सूक्ष्म उत्तर परीक्षणों को प्रयोग में लाते हैं। निबन्धात्मक परीक्षाओं को विस्तार में विवेचन निम्नलिखित पंक्तियों में किया गया है।

Notes

FEBRUARY					
M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	

Scanned with CamScanner

i) निबन्धात्मक परीक्षाएँ — (Essay Type Examina
आधुनिक प्रचलित परीक्षण प्रणाली में निबन्धात्मक परीक्षाएँ अधिक प्रयुक्त की जाती हैं परन्तु इस विधि के द्वारा परीक्षण की आवश्यसनीयता तथा अवैधता भी प्रमाणित की गई है। इस परीक्षा पद्धति के मुख्य सीमाएँ निम्नलिखित हैं।

सीमाएँ —
1) निबन्धात्मक परीक्षाओं में ज्ञान स्तर पर ज्ञान की परीक्षा पर अधिक बल दिया जाता है, शिक्षण के अन्य उद्देश्यों के परीक्षण की अवहेलना की जाती है।
2) शिक्षण उद्देश्यों को प्रश्न पत्रों में पदों के चयन में ध्यान नहीं दिया जाता है। पाठ्यवस्तु का व्यापक प्रतिदर्श नहीं होता है।
3) उत्तर पुस्तिका के अंकन में परीक्षक की आत्मनिष्ठता का समावेश रहता है।
4) शिक्षण उद्देश्य केन्द्रित न होकर परीक्षा केन्द्रित होता है। बालक के गुणों के विकास आदि का ध्यान नहीं दिया जाता है। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए अनावश्यक बातें को रटना होता है, इसमें पाठ्यवस्तु को रटने पर अधिक बल दिया जाता है।
5) निबन्धात्मक परीक्षाओं की सहायता से छात्रों की विशेषताओं तथा न्यूनताओं का पता नहीं लगाया जाता है।
6) इसमें बालक के सुलेख तथा लिखने की गति का मूल्यांकन होता है। बालकों की क्षमताओं का मापन शुद्ध रूप में नहीं होता है।
7) यह परीक्षाएँ विश्वसनीय तथा वैध नहीं होती हैं।

RCH
6 13 20 27
7 14 21 28
8 15 22 29
9 16 23 30
10 17 24 31
11 18 25
12 19 26
Phone/Email/Notes
Notes
Scanned with CamScanner

विशेषताएँ - इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं -

1) निबन्धात्मक परीक्षाओं से उच्चस्तरीय बौद्धिक कुशलताओं जैसे - ज्ञान - प्रयोग, सौन्दर्यानुभूति, क्षमताओं की परीक्षा की जाती है।

2) इनसे बालकों के मौलिक चिन्तन एवं सूक्ष्म तथा सर्जनात्मक क्षमताओं की जाँच की जाती है।

3) बालकों की भाषा, शैली आदि की इन्हीं परीक्षाओं द्वारा जाँच की जाती है।

4) निबन्धात्मक परीक्षाओं को उद्देश्य केन्द्रित बनाया जाता है।

(क) ज्ञान - उद्देश्य →

1) व्यवहार ⇒ तथ्यों की स्मृति की क्षमता है।

प्रश्न - अफ्रीका महाद्वीप में ऊन-उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र कौन-कौन हैं?

प्रश्न - मध्य एशिया में किन-किन देशों में तेल का उत्पादन होता है।

2) व्यवहार ⇒ कारण एवं प्रभाव का सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता है।

प्रश्न - सूरत तथा नागपुर लगभग एक ही अक्षांशों में स्थित हैं, परन्तु नागपुर की अपेक्षा सूरत में ऊनी वस्त्रों का उपयोग कम होता है, क्यों?

ail/Notes

Scanned with CamScanner